Class Notes for students of B.A. Geography Hons. part – II, Paper – III, Unit – V

बिहार में कृषि आधारित उद्योग

Agro - based industries in Bihar

बोलेन्द्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल

जूट या पटसन उद्योग

कृषि उत्पादन पर आधारित उद्योगों में जूट/पटसन उद्योग का बिहार की औद्योगिक अर्थव्यवस्था में महत्व रहा है । जूट उद्योग के विकास की परंपरा से प्रत्यक्ष संबंध उत्तर-पूर्वी बिहार, पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश से रहा है । उत्तर-पूर्वी बिहार में जूट उद्योग का प्रारंभ देश की स्वाधीनता के पूर्व में ही हुआ है । कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले प्रदेश में जूट मिल की प्रासंगिकता अहम होती है । कृषि उत्पादन के भंडारण, खलिहान से घर या विपणन केंद्र तक पहुंचाने तथा अन्य विविध घरेलू जरूरतों की पूर्ति के लिए बोरे, दरी, रस्सी, मैट इत्यादि के रूप में जूट का उपयोग किया जाता है ।

बिहार में जूट/पटसन उद्योग की संरचनात्मक विशेषताएं

बिहार राज्य में पटसन उद्योग का स्थानिक वितरण उत्तर-पूर्वी जिला पूर्णिया, कटिहार, किशनगंज तथा अररिया में प्रधान रूप से एवं समस्तीपुर, दरभंगा के अलावा नालंदा में पाया जाता है । प्रमुख जूट मिलें:

- नेशनल जूट मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन कटिहार
- कटिहार जूट मिल्स लिमिटेड
- गोपाल जूट इंडस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड दरभंगा
- रामेश्वर जूट इंडस्ट्री समस्तीपुर
- मौर्य जूट मिल्स नालंदा आदि उल्लेखनीय हैं ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व भारत में कुल 110 जूट मिलें थी । इनमें से अधिकांश की अवस्थिति पश्चिम बंगाल तथा बिहार राज्य में ही थी । बिहार राज्य में जूट उद्योग के विकास के लिए अनुकूल वातावरण या औद्योगिक परिस्थितिकी की भूमिका रही है ।

अनुकूल जलवायु दशा - उत्तर-पूर्वी बिहार की जलवायु परिस्थितिकी उच्च वर्षा, आर्द्रता तथा तापमान की विशेषता रखती है । ऐसी जलवायु में जूट मिलों का परिचालन सफल होता है ।

अनुकूल भूमि - उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी तथा बाढ़ग्रस्त खादर के मैदान की उपस्थिति में पटसन की कृषि के लिए आदर्श भूमि की अनुकूलता है । निम्न ढाल प्रवणता एवं जल जमाव की धरातलीय स्थिति में जूट की कृषि तथा जूट मिलों के लिए कच्चे माल के परिष्करण की सुविधा इस भाग में व्याप्त है ।

मुद्रादायिनी फसलों से प्रतिस्पर्धा का अभाव - उत्तर-पूर्वी बिहार की कृषि पारिस्थितिकी समानत: अन्य नगदी फसलों के उत्पादन को सीमित रखती है । जूट की कृषि के लिए यह भाग प्राकृतिक गृह रहा है ।

विस्तृत बाजार एवं मांग - बिहार कृषि प्रधान राज्य है । कृषि में उन्नयन से प्रेरित कृषि उत्पादन के भंडारण और ढुलाई के लिए पटसन से बने बोरों एवं चादरों की मांग बढ़ी है । कृषि से जुड़ा बिहार का ग्रामीण समाज इसकी खपत के लिए बड़ा बाजार प्रस्तुत करता है ।

सस्ते एवं प्रचुर श्रमिकों की उपलब्धि - पटसन उद्योग श्रमिक प्रधान है । जूट के पौधों की खेती से लेकर कच्चे माल एवं औद्योगिक उत्पादन तक जनसंख्या बहुल उत्तरी-पूर्वी बिहार सस्ते तथा प्रचुर श्रमिकों की जरूरत पूरी करता है ।

परिवहन साधनों में सुधार - स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत उत्तर-पूर्वी बिहार के परिवहन प्रणाली में संतोषजनक प्रगति हुई है, जिसके फलस्वरूप जूट उद्योग के विकास में समर्थन मिला है ।

क्रियात्मक परिचालन से संबंधित विशेषताएं

बिहार में जूट उद्योग के लिए उपलब्ध क्रियात्मक परिचालन वातावरण में ह्रास हुआ है । निम्नलिखित मिलें रुग्णोंन्मुख हैं और पुनर्वास की बाट जोह रहे हैं:

मिल	निवेश (लाख रु.)	रोजगार प्राप्त श्रमिक	उत्पादन क्षमता (टन)
नेशनल जूट मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, कटिहार	227.4	2397	10800
गोपाल जूट मिल इंडस्ट्री दरभंगा	214.06	110	3000
रामेश्वर जूट मिल्स समस्तीपुर	1114	42000	22000

बिहार में जूट उद्योग के क्रियात्मक परिचालन पर देश के विभाजन (अधिकांश जूट उत्पादक कृषि का बांग्लादेश में चले जाना), स्वतंत्रता के पूर्व कोलकाता के चटकल मिलों से स्पर्धा, बोरो तथा जूट के चादर के विकल्प में प्लास्टिक तथा पॉलिथीन का उत्पादन और उपयोग तथा जूट मिलों की परंपरागत उत्पादन प्रक्रिया एवं मशीनरी इत्यादि का प्रतिकूल प्रभाव देखा जा रहा है । जूट उद्योग के क्रियात्मक परिचालन प्रबंधन की दिशा में 2002-03 ई० में भारतीय हथकरघा प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना किशनगंज में की गई है । इस संस्थान में जूट प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्रशिक्षण की व्यवस्था है । प्रशिक्षित कामगारों की विशिष्टता जूट उद्योग के विकास की नई राह को प्रशस्त करने में सहायक होगा ।

खाद्यान्न परिष्करण उद्योग

कृषि प्रधान प्रदेश की जनसंख्या के लिए खाद्यान्न का अहम महत्व होता है । प्राथमिक रूप में प्राप्त खाद्यानों को, भोजन सामग्री के लिए उपयोग के पूर्व परिष्कृत करना जरूरी होता है, जो संपरिवर्तन प्रौद्योगिकी का परिणाम है । अतः धान से चावल, गेहूं से आटा, मैदा और सूजी, चना, मटर, मसूर इत्यादि से दाल और बेसन एवं सरस्वती से तिलहन से तेल और खली एवं अन्य उत्पादों को प्राप्त करने की प्रौद्योगिकी से समर्थित उद्योग खाद्यान्न परिष्करण उद्योग वर्ग में रखे जा सकते हैं ।

बिहार राज्य के खाद्यान्न परिष्करण उद्योगों में चावल मिल, आटा मिल, दलहन मिल तथा तेल पेराई मिल उल्लेखनीय है ।

चावल मिल / धान परिष्करण उद्योग

धान से चावल तैयार करना बिहार राज्य की औद्योगिक अनिवार्यता है । स्वभावत: एक ओर पारंपरिक प्रौद्योगिकी से समर्थित घरेलू उद्योग के रूप में चावल परिष्करण का व्यापक प्रचलन है । वहीं दूसरी और औद्योगिकीकृत नगरीकृत अर्थव्यवस्था की व्यापार-वाणिज्य आवश्यकता की पूर्ति के लिए निर्दिष्ट/क्षेत्रों में चावल परिष्करण उद्योग के रूप में बड़े तथा छोटे चावल मिलों की अवस्थिति निर्धारित हुई है । स्थानिक संरचना के लिए प्रासंगिक चावल मिलों का प्रमुख संकेंद्रण क्षेत्र बिहार-नेपाल सीमा से संलग्न फैलाव का है । रक्सौल, आदापुर, घोड़ासहन, नरकटियागंज, बैरगनिया, सीतामढ़ी, जनकपुर रोड, जयनगर, जोगबनी, फारबिसगंज, निर्मली, किशनगंज आदि इस क्षेत्र में चावल मिलों की प्रमुख अवस्थिति को चिन्हित करते हैं । भैरोगंज, रामनगर में भी चावल मिल है । पूर्वी तथा पश्चिमी चंपारण में अकेले 100 से ऊपर चावल मिलों की अवस्थिति है । रक्सौल में 3, आदापुर में 3, भलाटू में 3, चनपटिया में 3 तथा सिकटा में 4 चावल मिले हैं ।

चावल परिष्करण उद्योग का अन्य महत्वपूर्ण संकेंद्रण क्षेत्र दक्षिण बिहार के पश्चिम (सोन कमांड क्षेत्र) भाग में है । भोजपुर, बक्सर, रोहतास तथा कैमूर जिला (पुराना शाहाबाद जिला) में चावल मिलों की गहन अवस्थिति है । लगभग 130 से 140 की संख्या में । गया, औरंगाबाद, मुंगेर अर्थात दक्षिण बिहार के पूर्वी भाग में भी चावल मिलों की अवस्थिति पाई जाती है । मुंगेर जिले में (लखीसराय, शेखपुरा के साथ) लगभग 100 चावल मिलों की उपस्थिति है । दक्षिण बिहार के आरा, बिक्रमगंज, सासाराम, बक्सर, दाउद नगर, नवीनगर, जहानाबाद, बिहारशरीफ, लखीसराय, मानपुर, बिहटा, वारसलीगंज तथा अनेक अन्य स्थानों पर चावल मिलों की अवस्थिति है । इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के धान उत्पादन क्षेत्र में चावल परिष्करण की मिले बाजार तथा अन्य छोटे ग्रामीण शहरों में अवस्थित होते हैं ।

आटा मिल / गेहूं परिष्करण उद्योग

चावल के बाद गेहूं अन्य खाद्यान्न है जिसका खाद्य सामग्री के रूप में व्यापक प्रयोग किया जाता है । गेहूं का उपयोग मूल्यत: आटा, मैदा और सूजी के रूप में किया जाता है । चावल मिलों की तरह आटा मिलों की स्थानिक संरचना अनेक छोटे-बड़े उत्पादन इकाइयों की अवस्थिति से निर्धारित है । स्वभावत: आटा चक्की मिल के रूप में बिहार राज्य में डेढ़ हजार से अधिक औद्योगिक इकाइयां है । आटा मिलों का सर्वाधिक गहन संकेन्द्रण क्षेत्र पटना, गया, नालंदा, जहानाबाद, अरवल और औरंगाबाद जिलों में है । इसके अलावा भोजपुर, बक्सर, रोहतास, लखीसराय, भागलपुर तथा अन्य जिलों जहां नगरों की संख्यात्मक और आकारीय आवृत्तियां अधिक है, आटा मिलों की अवस्थिति में प्रगति दर्शाते हैं ।....**क्रमशः**

- सन्दर्भ: बिहार की भौगोलिक समीक्षा, वसुन्धरा प्रकाशन, डॉ नंदेश्वर शर्मा